# पाठ–6
# मूझे व्यक्ति–पूजा पसंद नहीं

**मूल पाठ :–**

व्यक्तिपूजा अच्छी बात नहीं है। यह जनतंत्र की मूल भावना के विरूद्ध है। भारत में कुछ राजनैतिक नेता धर्मसंस्थापक की तरह अपनी जयंती मनवाते हैं। कठोर संघर्ष से व्यक्ति को शक्ति मिलती है। इसलिए बच्चों को आग के पास रखता था कि उसे देवत्व प्राप्त हो ।

ग्रीक देवता डिमेटर प्रतिदिन शाम में बच्चे को दहकते अंगारे के पास रखता। वह बच्चे को कष्ट सहने के लायक बना रहा था। यह काम वह गोपनीय ढंग से करता था। संयोग से एक दिन रानी ने यह सब देख लिया। उसे लगा कि इससे बच्चे को कष्ट हो रहा है। उसने यह सब बंद करवा दिया। इससे बच्चा पूरी तरह से देवत्व प्राप्त नहीं कर सका।

बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तरह–तरह के कष्ट सहने पड़ते हैं। दलित–शोषित जनता को चाहिए कि अपनी मुक्ति के लिए चलने वाले संघर्ष में हिस्सा ले। उनके लिए अपनी पहचान कायम करना आसान नहीं है। इसलिए उन्हें अधिक संघर्ष की जरूरत है। इस क्रम में उसे तरह–तरह के कष्ट सहने पड़ेंगे पर इससे उन्हें घबड़ाना नहीं चाहिए। कोई संदेश, चमत्कार अथवा अलौकिक सत्ता उनका कल्याण नहीं करेगी। वर्तमान में परिश्रम करने से भविष्य सँवर सकता है। इसे एक उदाहरण द्वारा ठीक ढंग से समझा जा सकता है। जो छात्र हरदम मन लगा कर पढ़ते है। उन्हें परीक्षा के समय बेचैन नहीं होना पड़ता है।

अछूत लोगों को अपनी मुक्ति के लिए स्वयं आगे आना चाहिए। मुक्ति के संघर्ष में उन्हें घबड़ाना नहीं चाहिए। व्यवस्था में परिवर्तन ही उसका संदेश है।

**डॉ0 भीमराव अंबेदकर**